ॐ जय चित्रगुप्त हरे, स्वामी जय चित्रगुप्त हरे।
भक्तजनों के इच्छित, फल को पूर्ण करे॥

विघ्न विनाशक मंगलकर्ता, सन्तन सुखदायी।
भक्तों के प्रतिपालक, त्रिभुवन यश छायी॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

रूप चतुर्भुज, श्यामल मूरत, पीताम्बर राजै।
मातु इरावती, दक्षिणा, वाम अंग साजै॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

कष्ट निवारक, दुष्ट संहारक, प्रभु अंतर्यामी।
सृष्टि सम्हारन, जन दुःख हारन, प्रकट भये स्वामी॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

कलम, दवात, शंख, पत्रिका, कर में अति सोहै।
वैजयन्ती वनमाला, त्रिभुवन मन मोहै॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

विश्व न्याय का कार्य सम्भाला, ब्रह्मा हर्षाये।
कोटि कोटि देवता तुम्हारे, चरणन में धाये॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

नृप सुदास अरु भीष्म पितामह, याद तुम्हें कीन्हा।
वेग, विलम्ब न कीन्हौं, इच्छित फल दीन्हा॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

दारा, सुत, भगिनी, सब अपने स्वारथ के कर्ता।
जाऊँ कहाँ शरण में किसकी, तुम तज मैं भर्ता॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

बन्धु, पिता तुम स्वामी, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

जो जन चित्रगुप्त जी की आरती, प्रेम सहित गावैं।
चौरासी से निश्चित छूटैं, इच्छित फल पावैं॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

न्यायाधीश बैकुंठ निवासी, पाप पुण्य लिखते।
'नानक' शरण तिहारे, आस न दूजी करते॥

॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥